IGNOU IQ HINDI

SOLVED ASSIGNMENT

2025-26

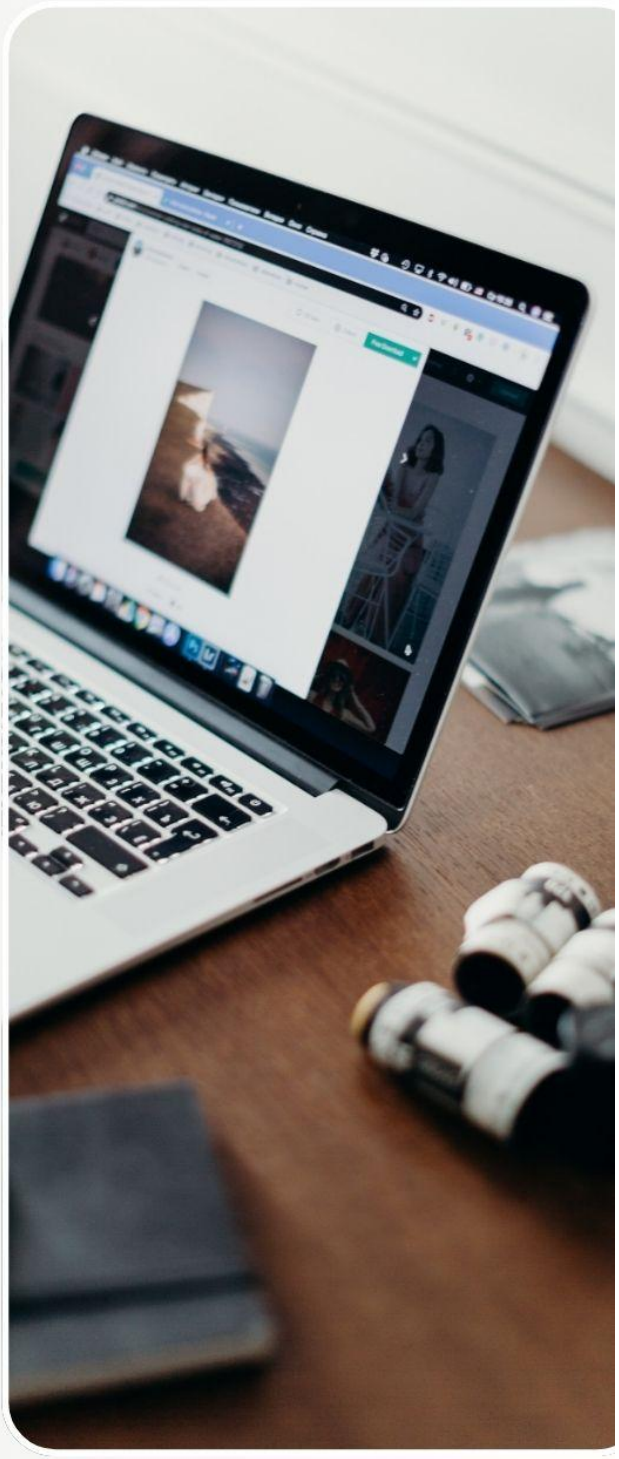

Your journey to success begins here join our comprehensive online course.

CONTACT US

6205717642/8521027286

ignouiqinfo@gmail.com

This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BHDAE - 182

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) .....visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

सत्रीय कार्य

(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ए.ई-182/

सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ए.ई-182/2025-2026

कुल अंक : 100

नोट: सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सत्रीय कार्य
(संपूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

पाठ्यक्रम कोड : बी.एच.डी.ए.ई–182/
सत्रीय कार्य कोड : बी.एच.डी.ए.ई–182/2025-2026
कुल अंक : 100

नोट : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खंड – क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए : 20× 2=40

1. भाषा के स्वरूप और प्रकृति पर विचार कीजिए।
   अथवा
   हिंदी भाषा और उसके विकास को रेखांकित कीजिए।

2. मूल स्वर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
   अथवा
   उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन के भेदों की चर्चा कीजिए।

खंड –ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए : 10×4=40

3. हिंदी भाषा के स्वरूप और क्षेत्र पर विचार कीजिए।
4. स्वर एवं व्यंजन वर्णों को सोदाहरण समझाइए।
5. स्वर के प्रकारों की चर्चा कीजिए।
6. लिंग– विधान और लिंग –परिवर्तन पर प्रकाश डालिए।

खंड –ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए : 5×4=20

7. लेखन कौशल से आप क्या समझती/समझते हैं?
8. देवनागिरी लिपि की वर्णव्यवस्था का विवेचन कीजिए।
9. 'पदक्रम' से आप क्या समझती/समझते हैं?
10. कारक और विभक्ति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

खंड - क

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 800 शब्दों में दीजिए :

1. **भाषा के स्वरूप और प्रकृति पर विचार कीजिए।**

अथवा

हिंदी भाषा और उसके विकास को रेखांकित कीजिए।

उत्तर : **भाषा के स्वरूप और प्रकृति पर विचार कीजिए।**

भाषा मानव समाज की एक अनिवार्य एवं विशिष्ट उपलब्धि है। यह केवल संप्रेषण का साधन ही नहीं, बल्कि विचारों, भावनाओं, संस्कृति और सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। भाषा के **स्वरूप** और **प्रकृति** को समझना भाषा-विज्ञान का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। भाषा का स्वरूप विचारों, भावनाओं के आदान-प्रदान का एक **सांकेतिक, व्यवस्थित और सामाजिक माध्यम** है, जिसकी प्रकृति **परिवर्तनशील, अर्जित और नियमबद्ध** होती है, जो समाज, संस्कृति और समय के साथ विकसित होती है, और इसमें **ध्वनि, शब्द और व्याकरण** के निश्चित नियम होते हैं, जिससे मनुष्य एक-दूसरे को समझ पाते हैं और ज्ञान का हस्तांतरण करते हैं.

1. भाषा का स्वरूप

भाषा के स्वरूप से आशय उसकी मूल विशेषताओं और संरचना से है—

1. **ध्वन्यात्मक स्वरूप**
   भाषा का मूल आधार ध्वनि है। बोलचाल की भाषा पहले अस्तित्व में आती है, लेखन उसका बाद का रूप है।
2. **प्रतीकात्मकता**
   भाषा प्रतीकों (शब्दों) की एक व्यवस्था है, जिनके माध्यम से अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। शब्द और अर्थ का संबंध सामान्यतः मनमाना (Arbitrary) होता है।
3. **संरचनात्मक व्यवस्था**
   भाषा में ध्वनि, शब्द, पद और वाक्य की सुव्यवस्थित प्रणाली होती है, जो व्याकरणिक नियमों से नियंत्रित होती है।
4. **सार्थकता**
   भाषा का प्रत्येक तत्व अर्थ से जुड़ा होता है। निरर्थक ध्वनियाँ भाषा नहीं बनातीं।
5. **सामाजिक स्वरूप**
   भाषा व्यक्ति की नहीं, समाज की संपत्ति होती है। समाज के बिना भाषा का अस्तित्व संभव नहीं।
6. **ध्वन्यात्मक व्यवस्था:** भाषा ध्वनियों (उच्चारित प्रतीकों) की एक व्यवस्था है, जहाँ ध्वनि समूह (जैसे 'क', 'म', 'ल' मिलकर 'कमल') एक अर्थ के प्रतीक बन जाते हैं.
7. **सांकेतिक प्रणाली:** यह शब्दों, वाक्यों और व्याकरण के नियमों पर आधारित एक सांकेतिक प्रणाली है जो अर्थ को व्यक्त करती है.

8. **व्याकरणिक ढाँचा:** भाषा में संज्ञा, क्रिया, विशेषण जैसे पदों और उनके संबंधों (जैसे कर्ता, कर्म, क्रिया) के निश्चित नियम होते हैं, जो वाक्य रचना को संभव बनाते हैं.
9. **सामाजिक संस्था:** यह समाज के लिए आवश्यक है और समाज के बिना भाषा की कल्पना नहीं की जा सकती; यह समाज को जोड़ती है.

2. भाषा की प्रकृति

भाषा की प्रकृति उसके स्वभाव, कार्य और विकासशीलता से संबंधित है—

1. **मानव-विशेष की विशेषता**
   भाषा केवल मनुष्य में पाई जाती है। पशुओं की ध्वनियाँ भाषा नहीं कही जा सकतीं क्योंकि वे सीमित और अर्थ-निर्धारित नहीं होतीं।
2. **अर्जित (सीखी हुई) होती है**
   भाषा जन्मजात नहीं होती, बल्कि सामाजिक वातावरण में सीखी जाती है।
3. **परिवर्तनशीलता**
   भाषा स्थिर नहीं रहती; समय, स्थान और समाज के अनुसार इसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है।
4. **सृजनात्मकता**
   सीमित शब्दों और नियमों से अनंत नए वाक्यों का निर्माण संभव है।
5. **सांस्कृतिक वाहक**
   भाषा संस्कृति, परंपरा, इतिहास और ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है।
6. **संचार का सशक्त माध्यम**
   भाषा के द्वारा विचारों, भावनाओं, इच्छाओं और सूचनाओं का प्रभावी आदान-प्रदान होता है।
7. **सामाजिक और सांस्कृतिक:** भाषा सामाजिक परिवेश और सांस्कृतिक विकास के अनुरूप बदलती है.
8. **परिवर्तनशील (Dynamic):** समय के साथ भाषा के ध्वनि, शब्द और वाक्य-विन्यास (syntax) में परिवर्तन आता है (जैसे संस्कृत से हिन्दी का विकास).
9. **अर्जित संपत्ति (Learned):** यह जन्मजात नहीं, बल्कि अनुकरण और अभ्यास से सीखी जाती है (जैसे बच्चे माता-पिता से सीखते हैं).
10. **नियमबद्ध (Systematic):** इसमें निश्चित व्याकरणिक नियम होते हैं, जो इसे व्यवस्थित बनाते हैं, हालांकि इसमें अपवाद भी होते हैं (जैसे हिन्दी के नियम अपवाद-विहीन माने जाते हैं).
11. **मानव-विशिष्ट (Human-specific):** यह मनुष्य को अन्य पशुओं से अलग करती है, जो केवल वर्तमान की घटनाओं को व्यक्त कर पाते हैं, जबकि मनुष्य विचारों और अमूर्त बातों को संप्रेषित कर सकते हैं.
12. **असीमित रचनात्मकता:** भाषा से असीमित नए वाक्य बनाए जा सकते हैं (Productivity), जिससे नई चीज़ों और अवधारणाओं को व्यक्त किया जा सकता है.

निष्कर्ष

इस प्रकार भाषा का स्वरूप संरचनात्मक, प्रतीकात्मक और सामाजिक है, जबकि उसकी प्रकृति मानवीय, अर्जित, परिवर्तनशील और सांस्कृतिक है। भाषा मानव जीवन की आत्मा है, जिसके बिना समाज, संस्कृति और ज्ञान की कल्पना संभव नहीं। क्षेप में, भाषा केवल बोलने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति और मानवीय चेतना का एक गतिशील, व्यवस्थित और शक्तिशाली उपकरण है जो विचारों को आकार देता है और उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाता है.

2. मूल स्वर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

अथवा

उच्चारण स्थान के आधार पर व्यंजन के भेदों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : **मूल स्वर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।**

मूल स्वर (ह्रस्व स्वर) वे स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं जिनके उच्चारण में सबसे कम समय लगता है और जिन्हें बनाने में किसी अन्य स्वर की सहायता नहीं लेनी पड़ती; हिंदी में ये चार हैं: **अ, इ, उ, ऋ**, जो वर्णमाला के आधार हैं और इनसे दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ) बनते हैं, जैसे 'अ' से 'आ' (अ+अ) या 'ओ' (अ+उ) का निर्माण होता है, जो इन्हें मूल बनाता है.

मूल स्वर की परिभाषा

- **अर्थ:** वे स्वर जो किसी अन्य स्वर से मिलकर नहीं बने होते, बल्कि स्वतंत्र होते हैं और अपने आप में पूर्ण होते हैं.
- **उच्चारण:** इनके उच्चारण में सबसे कम समय (एक मात्रा का समय) लगता है, इसलिए इन्हें ह्रस्व स्वर भी कहते हैं.

उदाहरण

- **मूल स्वर:** अ, इ, उ, ऋ.
- **उदाहरण शब्द:**
  - **अ: अ**मर, कल (यहाँ 'अ' की ध्वनि है).
  - **इ: इ**मली, दिन (यहाँ 'इ' की ध्वनि है).
  - **उ: उ**ल्लू, धनुष (यहाँ 'उ' की ध्वनि है).
  - **ऋ: ऋ**षि, कृपा (यहाँ 'ऋ' की ध्वनि है).

मूल स्वर से दीर्घ स्वरों का निर्माण

- मूल स्वरों के मेल से ही दीर्घ स्वर बनते हैं, जो इन्हें मूल स्वर से अलग करते हैं.
  - अ + अ = आ (जैसे: राम).
  - इ + इ = ई (जैसे: नील).

- उ + उ = ऊ (जैसे: धूप).
- अ + इ = ए (जैसे: केश).
- अ + उ = ओ (जैसे: लोम).

इस प्रकार, **अ, इ, उ, ऋ** हिंदी भाषा के वे बुनियादी स्वर हैं जिनसे अन्य सभी स्वर बने हैं, इसलिए ये 'मूल स्वर' कहलाते हैं.

खंड - ख

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 400 शब्दों में दीजिए:

3. हिंदी भाषा के स्वरूप और क्षेत्र पर विचार कीजिए।

उत्तर : हिंदी भाषा का स्वरूप **खड़ी बोली** पर आधारित एक **मानकीकृत रूप (मानक हिंदी)** है, जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और शिक्षा, प्रशासन व साहित्य में प्रयुक्त होती है, वहीं इसका क्षेत्र विशाल है, जिसमें ब्रज, अवधी, भोजपुरी जैसी कई **बोलियाँ** शामिल हैं, जो भाषा को विविधता और गहराई देती हैं, साथ ही **उर्दू** के प्रभाव से हिंदुस्तानी और बंबईया हिंदी जैसे रूप भी विकसित हुए हैं, जिससे यह एक प्रमुख संपर्क भाषा बन गई है।

हिंदी भाषा का स्वरूप (Nature of Hindi Language)

- **मानक हिंदी:** यह दिल्ली और आसपास के क्षेत्रों की खड़ी बोली पर आधारित है। यह औपचारिक लेखन, शिक्षा और सरकारी कामकाज (राजभाषा) की भाषा है और संस्कृतनिष्ठ शब्दों का प्रभाव होता है।
- **व्याकरणिक सरलता:** हिंदी के कई नियम अपवाद-रहित हैं और इसकी वैज्ञानिक देवनागरी लिपि इसे आसान बनाती है।
- **परिवर्तनशीलता:** समय के साथ ध्वनि, रूपरचना और अर्थ में परिवर्तन होता है (जैसे संस्कृत के 'अक्षि' से 'आँख') और यह अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करती है, जिससे यह गतिशील रहती है।
- **लिपि:** देवनागरी, जो विश्व की सबसे वैज्ञानिक लिपियों में से एक मानी जाती है।
- **शब्दकोश:** इसका शब्दकोश विशाल है और भावों के लिए अनेक शब्द उपलब्ध हैं।

हिंदी भाषा का क्षेत्र (Scope of Hindi Language)

- **विशाल भौगोलिक क्षेत्र:** यह भारत के बड़े भू-भाग में बोली-समझी जाती है और भारत की राजभाषा है, जिससे इसका क्षेत्र लगातार बढ़ रहा है।
- **साहित्यिक एवं सांस्कृतिक:** यह साहित्य, मीडिया, संस्कृति और कूटनीति की भाषा है।
- **संपर्क भाषा:** स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रीय एकता के दौरान इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और आज यह देश की प्रमुख संपर्क भाषा है।
- **विभिन्न रूप:**
    - **क्षेत्रीय बोलियाँ:** अवधी, ब्रजभाषा, भोजपुरी, हरियाणवी, छत्तीसगढ़ी, राजस्थानी आदि हिंदी की विविधता और शक्ति हैं।

    - **उर्दू प्रभाव:** फ़ारसी-अरबी लिपि में लिखी जाने वाली उर्दू से प्रभावित होकर 'रेख्ता' और 'हिंदुस्तानी' (बंबईया हिंदी) जैसे रूप बने, जो बोलचाल और फिल्म जगत में प्रचलित हैं।
- **प्रशासनिक:** राजभाषा हिंदी के रूप में प्रशासन, विधि और अन्य सरकारी कार्यों में इसका प्रयोग होता है, जिसके लिए विशेष शब्दावली विकसित की गई है।

संक्षेप में, हिंदी एक जीवंत भाषा है जो अपने मानकीकृत स्वरूप (खड़ी बोली) और विशाल क्षेत्रीय विस्तार (बोलियों के साथ) के कारण आधुनिक भारत की एक सशक्त और विकसित भाषा है, जो निरंतर प्रगति कर रही है।

4. स्वर एवं व्यंजन वर्णों को सोदाहरण समझाइए।

उत्तर : भाषा की सबसे छोटी ध्वन्यात्मक इकाइयों को **वर्ण** कहा जाता है। हिंदी वर्णमाला में वर्णों को मुख्यतः दो वर्गों में बाँटा गया है—

1. **स्वर वर्ण**
2. **व्यंजन वर्ण**

1. स्वर वर्ण

(क) परिभाषा

जिन वर्णों के उच्चारण में वायु बिना किसी अवरोध के मुख से निकलती है और जिन्हें स्वतंत्र रूप से बोला जा सकता है, उन्हें **स्वर वर्ण** कहते हैं।

(ख) हिंदी के स्वर

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः

(ग) उदाहरण

- **अ** — अनार, अमर
- **आ** — आम, आकाश
- **इ** — इमली, इधर
- **ई** — ईख, ईश्वर
- **उ** — उपवन, उल्लू
- **ऊ** — ऊन, ऊर्जा
- **ए** — एक, सेब
- **ओ** — ओस, सोना
- **औ** — औषधि, औजार
- **अं** — अंग, अंक

- **अः** — दुःख, प्रातः

(घ) विशेषताएँ

- स्वतंत्र रूप से बोले जाते हैं।
- व्यंजन के साथ मात्रा रूप में भी प्रयुक्त होते हैं।
- शब्दों में प्राण होते हैं।

2. व्यंजन वर्ण

(क) परिभाषा

जिन वर्णों का उच्चारण स्वर की सहायता के बिना नहीं हो सकता और जिनके उच्चारण में वायु के प्रवाह में अवरोध आता है, उन्हें **व्यंजन वर्ण** कहते हैं।

(ख) व्यंजनों के प्रकार (संक्षेप में)

(1) वर्गीय व्यंजन

क, ख, ग, घ, ङ
च, छ, ज, झ, ञ
ट, ठ, ड, ढ, ण
त, थ, द, ध, न
प, फ, ब, भ, म

उदाहरण

- क — कमल
- ग — गाय
- त — तारा
- प — पतंग

(2) अंतःस्थ व्यंजन

य, र, ल, व

उदाहरण

- य — योग
- र — राजा
- ल — लता
- व — वन

(3) ऊष्म व्यंजन

श, ष, स, ह

उदाहरण

- श – शेर
- स – सूरज
- ह – हाथ

3. स्वर और व्यंजन में अंतर

आधार	स्वर	व्यंजन
उच्चारण	बिना अवरोध	अवरोध के साथ
स्वतंत्रता	स्वतंत्र	स्वर पर आश्रित
भूमिका	शब्द का आधार	शब्द की संरचना

निष्कर्ष

स्वर और व्यंजन मिलकर ही भाषा की रचना करते हैं। स्वर शब्दों में प्राण डालते हैं, जबकि व्यंजन उन्हें आकार और संरचना प्रदान करते हैं। दोनों का सामंजस्य ही भाषा को पूर्ण और प्रभावशाली बनाता है।

5. स्वर के प्रकारों की चर्चा कीजिए।

उत्तर : स्वर (Vowels) के मुख्य प्रकार उच्चारण में लगने वाले समय (मात्रा) के आधार पर तीन होते हैं: **ह्रस्व स्वर** (कम समय, जैसे अ, इ, उ, ऋ), **दीर्घ स्वर** (अधिक समय, जैसे आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ), और **प्लुत स्वर** (सबसे अधिक समय, जैसे ॐ). ह्रस्व स्वर एक मात्रिक, दीर्घ स्वर द्विमात्रिक और प्लुत स्वर त्रिमात्रिक होते हैं.

स्वरों के प्रकार (Types of Vowels)

1. ह्रस्व स्वर (Short Vowels):

- **परिभाषा:** जिनके उच्चारण में सबसे कम समय (एक मात्रा के बराबर) लगता है, वे ह्रस्व स्वर कहलाते हैं.
- **उदाहरण:** अ, इ, उ, ऋ.

2. दीर्घ स्वर (Long Vowels):

- **परिभाषा:** जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से दोगुना समय (दो मात्रा के बराबर) लगता है, वे दीर्घ स्वर कहलाते हैं.
- **उदाहरण:** आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ.
- **विशेष:** ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर भी कहलाते हैं, क्योंकि ये दो स्वरों के मेल से बनते हैं (जैसे अ+इ = ए).

3. प्लुत स्वर (Prolonged Vowels):

- **परिभाषा:** जिनके उच्चारण में ह्रस्व स्वरों से तिगुना या उससे भी अधिक समय लगता है, वे प्लुत स्वर कहलाते हैं (त्रिमात्रिक).
- **उदाहरण:** ॐ (ओम्), या किसी को पुकारते समय 'राम' को 'राऽऽम' बोलना.
- **उपयोग:** संस्कृत और कुछ हिंदी शब्दों में इनका प्रयोग होता है.

मुख्य अंतर:

- **ह्रस्व:** एक मात्रा (अ, इ, उ, ऋ).
- **दीर्घ:** दो मात्रा (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ).
- **प्लुत:** तीन या अधिक मात्रा (ॐ).

6. लिंग- विधान और लिंग परिवर्तन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : लिंग विधान (Gender System) किसी भाषा में संज्ञाओं, सर्वनामों और विशेषणों को पुल्लिंग (Masculine) और स्त्रीलिंग (Feminine) जैसे वर्गों में बांटने का व्याकरणिक नियम है, जो भाषा की सुंदरता और व्याकरणिक शुद्धता बढ़ाता है, जबकि लिंग परिवर्तन (Gender Transformation) एक व्यक्ति की आंतरिक पहचान (लिंग पहचान) और उसके बाहरी शारीरिक लक्षणों (सेक्स) के बीच असंगति होने पर, अपनी पहचान के अनुरूप शरीर में बदलाव करने या व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है, जो भाषाई बदलाव और सामाजिक-चिकित्सीय पहलुओं को शामिल करती है, जिसमें व्याकरणिक लिंग बदलने (जैसे लेखक से लेखिका) और व्यक्ति के जीवन में लिंग-पुष्टि प्रक्रियाएँ शामिल हैं,।

लिंग विधान (Grammatical Gender)

- **अर्थ**: यह व्याकरण का एक हिस्सा है, जहाँ शब्दों को लिंग के आधार पर पुल्लिंग या स्त्रीलिंग में बांटा जाता है, जैसे हिंदी में 'लड़का' (पुल्लिंग) और 'लड़की' (स्त्रीलिंग)।
- **उद्देश्य**: भाषा में शब्दों के सही रूप और वाक्य संरचना को स्पष्ट करना, जिससे भाषा अधिक प्रभावशाली और सुंदर बनती है।
- **उदाहरण**:
  - संस्कृत से आए शब्द (जैसे 'राजा') अक्सर संस्कृत के लिंग के अनुसार चलते हैं।
  - हिंदी में, कुछ प्रत्यय (जैसे 'अक' की जगह 'इका') लिंग बदलने में मदद करते हैं (लेखक -> लेखिका)।

लिंग परिवर्तन (Gender Transformation/Transition)

- **अर्थ**: यह दो संदर्भों में देखा जाता है:
  - **भाषाई संदर्भ**: शब्दों के लिंग को बदलना (जैसे 'अध्यापक' से 'अध्यापिका')।
  - **सामाजिक/व्यक्तिगत संदर्भ**: एक व्यक्ति का अपनी लिंग पहचान (जैसे ट्रांसजेंडर होना) के अनुसार अपने शारीरिक और सामाजिक लिंग को बदलना, जो मेडिकल (सर्जरी, हार्मोन) और सामाजिक पहलुओं (नाम, पहनावा) को छूता है।

- **चिकित्सीय प्रक्रिया**: इसमें जननांगों का पुनर्निर्माण (Gender Affirmation Surgery) या हार्मोन थेरेपी शामिल हो सकती है, ताकि बाहरी शरीर आंतरिक पहचान से मेल खाए।
- **सामाजिक प्रक्रिया**: इसमें व्यक्ति का अपनी पहचान के अनुरूप व्यवहार, पोशाक और नाम बदलना शामिल है, जो एक सतत प्रक्रिया हो सकती है।
- **महत्व**: यह व्यक्ति की आत्म-पहचान और सम्मान के लिए महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके सामाजिक और चिकित्सा संबंधी पहलू जटिल होते हैं और विभिन्न संस्कृतियों व चिकित्सा राय में भिन्न होते हैं।

संक्षेप में, लिंग विधान व्याकरणिक नियमों से जुड़ा है, जबकि लिंग परिवर्तन एक भाषाई परिवर्तन या किसी व्यक्ति के आत्म-पहचान के अनुरूप जीवनशैली और शरीर में बदलाव की एक गहरी प्रक्रिया है।

खंड – ग

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए :

7.लेखन कौशल से आप क्या समझती / समझते हैं?

उत्तर : **लेखन कौशल** से तात्पर्य उस क्षमता से है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने **विचारों, भावनाओं, अनुभवों और सूचनाओं** को **स्पष्ट, सुसंगठित और प्रभावी भाषा** में लिखित रूप में व्यक्त कर सके।

अच्छे लेखन कौशल में निम्नलिखित तत्व शामिल होते हैं—

- **भाषा पर पकड़** (शब्दावली, व्याकरण, वर्तनी)
- **विचारों की स्पष्टता** और तार्किक क्रम
- **उद्देश्य के अनुसार शैली** (निबंध, पत्र, कहानी, रिपोर्ट आदि)
- **पाठक को ध्यान में रखकर लेखन**
- **संक्षिप्तता और प्रभावशीलता**

संक्षेप में, लेखन कौशल वह योग्यता है जो लिखित माध्यम से संप्रेषण को **सार्थक, प्रभावी और समझने योग्य** बनाती है।

लेखन कौशल (Writing Skills) का अर्थ है अपने विचारों, अनुभवों, भावनाओं और सूचनाओं को लिपिबद्ध (लिखित) रूप में स्पष्ट, तर्कसंगत, व्याकरणिक रूप से शुद्ध और प्रभावी तरीके से व्यक्त करने की क्षमता। यह केवल अक्षर बनाना नहीं, बल्कि भाषा के माध्यम से विचारों को सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने की एक कला है, जो संप्रेषण को स्थायी और प्रभावशाली बनाती है।

लेखन कौशल के मुख्य पहलू:

- **अभिव्यक्ति (Expression):** विचारों को स्पष्ट रूप से लिखित शब्दों में ढालना।
- **व्याकरणिक शुद्धता (Grammatical Accuracy):** सही व्याकरण, वर्तनी (स्पेलिंग) और विराम चिह्नों का प्रयोग।
- **संगठित संरचना (Structured Organization):** विचारों का तार्किक और व्यवस्थित प्रवाह।

- **शब्द चयन (Vocabulary):** विषय के अनुरूप सटीक शब्दों का उपयोग करना।
- **विषय-ज्ञान (Knowledge):** जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उसकी अच्छी समझ।

महत्व:
यह संचार का एक सशक्त माध्यम है जो शिक्षा, व्यावसायिक जीवन और विचारों के स्थायित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है। निरंतर अभ्यास और संपादन (Editing) से इसमें निपुणता प्राप्त की जा सकती है।

8. देवनागिरी लिपि की वर्णव्यवस्था का विवेचन कीजिए।

उत्तर : देवनागरी लिपि की वर्ण व्यवस्था अत्यंत वैज्ञानिक, व्यवस्थित और ध्वन्यात्मक है, जिसमें कुल 52 वर्ण (14 स्वर और 38 व्यंजन/अन्य) होते हैं। यह बाएं से दाएं लिखी जाने वाली अक्षरात्मक लिपि (Abugida) है, जिसमें व्यंजन में 'अ' स्वर अंतर्निहित होता है। इसका वर्गीकरण उच्चारण स्थान (कंठ्य, तालव्य आदि) और प्रयत्न के आधार पर होता है।

देवनागरी लिपि की वर्ण व्यवस्था का विस्तृत विवेचन इस प्रकार है:

1. वर्णों का वर्गीकरण (Classification of Letters):

- **स्वर (Vowels):** स्वर स्वतंत्र ध्वनियाँ हैं। पारंपरिक रूप से 14 स्वर (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ॠ, ऌ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः) माने जाते हैं, लेकिन हिंदी में मुख्य रूप से 11 स्वर (अ-औ) और दो अयोगवाह (अं, अः) का प्रयोग होता है।
- **व्यंजन (Consonants):** व्यंजनों को उच्चारण स्थान और प्रयत्न के आधार पर व्यवस्थित किया गया है।
    - **वर्गीय व्यंजन (5 वर्ग):** कंठ्य (क-वर्ग), तालव्य (च-वर्ग), मूर्धन्य (ट-वर्ग), दंत्य (त-वर्ग), ओष्ठ्य (प-वर्ग)।
    - **अन्तस्थ (Semi-vowels):** य, र, ल, व।
    - **ऊष्म (Sibilants):** श, ष, स, ह।
- **संयुक्त व्यंजन (Compound Consonants):** दो व्यंजनों के मेल से बने अक्षर,
- **द्विगुण/उत्क्षिप्त व्यंजन (Flap Consonants):** ड़, ढ़ (ड और ढ के विकसित रूप)।

2. वर्णमाला की वैज्ञानिकता (Scientific Nature):

- **ध्वन्यात्मकता:** जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है।
- **उच्चारण स्थान:** वर्णों का क्रम कंठ से ओष्ठ (मुँह के पिछले हिस्से से आगे) की ओर व्यवस्थित है।
- **अल्पप्राण-महाप्राण:** प्रत्येक वर्ग में पहला और तीसरा अक्षर अल्पप्राण (कम हवा) तथा दूसरा और चौथा महाप्राण (अधिक हवा) के रूप में व्यवस्थित है।
- **अनुनासिकता:** देवनागरी में अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (चंद्रबिंदु - ँ) के लिए स्पष्ट नियम हैं, जो स्वर का गुण हैं।

3. लेखन विशेषताएँ (Writing Features):

- **शिरोरेखा (Headline):** शब्दों के ऊपर खींची जाने वाली रेखा, जो देवनागरी की पहचान है।
- **मात्रा व्यवस्था:** स्वर जब व्यंजनों के साथ मिलते हैं, तो मात्रा रूप (जैसे: क+ा=का) धारण करते हैं।
- **अक्षरात्मकता:** व्यंजन और स्वर मिलकर एक 'अक्षर' बनाते हैं, न कि केवल 'वर्ण'।

4. देवनागरी वर्ण व्यवस्था की सीमाएँ (Limitations):

- कुछ वर्ण (जैसे - ऋ, ष, ऌ) हिंदी में अब उच्चारण की दृष्टि से कम या अलग प्रयोग होते हैं।
- लेखन में बार-बार हाथ उठाना पड़ता है, जिससे गति कम हो सकती है।

संक्षेप में, देवनागरी की वर्ण व्यवस्था भाषाविज्ञान के सिद्धांतों के अनुरूप एक उत्कृष्ट और व्यवस्थित प्रणाली है, जो ध्वनि वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित है।

9. 'पदक्रम' से आप क्या समझती / समझते हैं?

उत्तर : 'पदक्रम' का अर्थ है वाक्य में शब्दों (पदों) को एक निश्चित और व्याकरणिक नियम के अनुसार व्यवस्थित करने की प्रणाली। हिंदी में इसका सामान्य नियम कर्ता-कर्म-क्रिया (Subject-Object-Verb) है। पदों के सही क्रम से ही वाक्य का अर्थ स्पष्ट होता है, और यह वाक्य संरचना को सार्थक बनाता है।

पदक्रम की मुख्य बातें:

- **निश्चित संरचना:** पदक्रम वाक्य में शब्दों के स्थान निर्धारण को कहते हैं। उदाहरण: "राम आम खाता है" (कर्ता-कर्म-क्रिया)।
- **महत्व:** यह वाक्य का अर्थ स्पष्ट करता है। क्रम बदलने पर अर्थ बदल सकता है या वाक्य निरर्थक हो सकता है।
- **हिंदी का सामान्य पदक्रम:** सामान्यतः कर्ता, फिर कर्म/पूरक/क्रिया-विशेषण और अंत में क्रिया आती है।
- **उदाहरण:** 'पढ़ी पुस्तक मैंने' (अशुद्ध पदक्रम) - 'मैंने पुस्तक पढ़ी' (शुद्ध पदक्रम)।

संक्षेप में, सार्थक शब्दों को एक क्रम में व्यवस्थित करना ताकि वे सही अर्थ व्यक्त कर सकें, पदक्रम कहलाता है।

हिन्दी वाक्य व्यवस्था में पदक्रम के प्रमुख नियम अधोलिखित हैं—

1. क्रम की दृष्टि से भाषा की विभिन्न इकाइयों में तर्कसंगत निकटता होनी चाहिए।
    - यदि पद या पदबन्ध यथोचित क्रम में नहीं होंगे, तो वाक्य हास्यास्पद हो जाता है; यथा—
        - मुझे गर्म भैस का दूध चाहिए। ... मुझे भैंस का गर्म दूध चाहिए।
        - मरीज को एक दूध का गिलास पीने को दो। ... मरीज को दूध का एक गिलास पीने को दो। ... मरीज को एक गिलास दूध पीने को दो।
2. कर्ता और कर्म के बीच अधिकरण, अपादान, सम्प्रदान और करण कारक क्रमशः आते हैं; जैसे—
    - रमेश ने घर **में** (अधिकरण) आलमारी **से** (अपादान) श्याम **के लिए** (सम्प्रदान) हाथ **से** (करण) पुस्तक निकाली।
3. **कर्ता, कर्म और क्रिया** :

- वाक्य में 'कर्ता पद' सामान्यतः सबसे पहले आता है, 'कर्म पद' मध्य में और 'क्रिया पद' अंत में; यथा—
    - मोहन (कर्ता) ने भोजन (कर्म) किया (क्रिया)। इस वाक्य में 'मोहन' सबसे पहले, उसके बाद 'भोजन' और सबसे बाद 'किया' पद आया है; जो क्रमशः कर्ता, कर्म और क्रिया पद हैं।
    - शिखा (कर्ता) सो रही है (क्रिया)। इस वाक्य में 'शिखा' सबसे पहले और अंत में 'सो रही है' पद आया है; जो क्रमशः कर्ता और क्रिया पद हैं।
    - सोहन (कर्ता) मिठाई (कर्म) खा रहा है (क्रिया)। इस वाक्य में 'सोहन' सबसे पहले, उसके बाद 'मिठाई' और सबसे बाद 'खा रहा है' पद आया है; जो क्रमशः कर्ता, कर्म और क्रिया पद हैं।
    - पूजा (कर्ता) प्रतिदिन सुबह विद्यालय (कर्म) जाती है (क्रिया)। इस वाक्य में 'पूजा' सबसे पहले, उसके बाद 'प्रतिदिन सुबह विद्यालय' और सबसे बाद 'जाती है' पद आया है; जो क्रमशः कर्ता, कर्म और क्रिया पद हैं।

10.कारक और विभक्ति में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कारक वाक्य में संज्ञा या सर्वनाम का क्रिया से संबंध बताता है (जैसे: राम ने, रावण को, बाण से), जबकि विभक्ति (या परसर्ग) वे चिह्न हैं जो इस संबंध को दर्शाते हैं (जैसे: 'ने', 'को', 'से') और कारक के भेद के अनुसार लगते हैं; इसलिए, कारक एक भूमिका है और विभक्ति उस भूमिका को दर्शाने वाला चिह्न है, जिसका प्रयोग संस्कृत में प्रत्यय के रूप में होता है।

कारक (Karak)

- **अर्थ:**

वह संज्ञा या सर्वनाम शब्द जिसका क्रिया से सीधा संबंध हो।

- **उदाहरण:**

राम (कर्ता), रावण (कर्म), बाण (करण)।

- **भेद (हिन्दी में 8):**

कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, संबोधन।

विभक्ति (Vibhakti)

- **अर्थ:**

वे चिह्न (परसर्ग) जो कारक की पहचान कराते हैं और वाक्य में प्रयोग होने वाले शब्दों को पद बनाते हैं।

- **उदाहरण (हिन्दी में):**

ने, को, से, के लिए, का, के, की, में, पर।

- **भेद (संस्कृत में 7):**

प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी (सम्बोधन को छोड़कर)।

मुख्य अंतर

आधार	कारक	विभक्ति (परसर्ग)
भूमिका	वाक्य में भूमिका (जैसे: कर्ता, कर्म)।	भूमिका बताने वाला चिह्न या प्रत्यय (जैसे: ने, को)।
स्वरूप	संज्ञा या सर्वनाम का रूप (शब्द)।	चिह्न या प्रत्यय (शब्द के बाद लगते हैं)।
उदाहरण	कर्ता, कर्म, करण।	ने, को, से, के लिए।
संबंध	क्रिया से संबंध स्थापित करता है।	कारक की पहचान कराता है और क्रिया से संबंध स्थापित करने में मदद करता है।

उदाहरण: "राम ने रावण को बाण से मारा।"

- **राम, रावण, बाण:** कारक (कर्ता, कर्म, करण)।
- **ने, को, से:** विभक्ति (चिह्न)।

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286